ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No: UPBIL04292,
RNI REG.No.:UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No. 561/2013-14
Vol.-5, No.-I, PP-99-103, YEAR JUNE 2016

गाँधी जी के मूल्यों एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण

❑ डॉ0 राजेश त्रिपाठी
❑❑ वन्दना कुशवाहा

महात्मा गांधी एक ऐसा समाज चाहते थे, जिसमे सभी लोग स्वतन्त्र हो, सामाजिक एकता हो सत्य और अहिंसा हो तथा समाज में नैतिकता हो। गांधीजी के अनुसार स्त्री और पुरुष समाज रुपी सिक्के के दो पहलू है, उनमें से किसी एक के प्रति भेदभाव करना या किसी को नीचा समझना समाज की प्रगति में बाधा पहुँचाता है। '' जब औरत जिसे हम 'अबला' कहते है और जब 'सबला' बन जाती है, तो तमाम लोग जो असहाय है ताकतवर बन जाते है'' अगर औरतो को सही मायने में स्वतन्त्र होना है, तो उन्हे निर्भीक होना होगा। गांधी जी को यह एहसास था कि यह भय वास्तव में मनोवैज्ञानिक भय तथा असहायता है, जो सांस्कृतिक विरासत के नाम पर औरतो पर थोप दिया गया है। वास्तव में, यह भाारीरिक रुप से इतनी कमजोर नही है कि वे कुछ कर ही नही सकती। उन्होने समग्र नारी जाति को हमे ाा यही सन्दे ा दिया कि वे भली–भांति समझ ले कि वीरता और साहस की बानगी केवल पुरुष जाति का एकाधिकार नही है।

यह सच है कि सदियों महिलाओं को उनके घरो और आँगनों की दहलीज तक पिंजडों के परिन्दों की तरह कैद रखा गया है। जिसका उनके व्यक्तित्वों पर विना ाकारी प्रभाव पडा है। उनके विचारों का दायरा संकुचित हो गया है तथा उनकी इच्छायें और अभिरुचियां छोटी–छोटी बातों से ही कुन्द हो गयी है। विभिन्न सार्वजनिक सभाओं में जहां गांधी जी महिलाओं के बीच भाषण दिया करते थे तो वह अक्सर महसूस किया करते थे कि कभी–कभी भाषणों के दौरान महिलायें कसमसाती हुयी कोलाहल करने लगती थी। जैसे ही उन्हे रोजमर्रा की बातों से आगे की किसी और महत्वपूर्ण कार्यो के लिये उकसाया जाने लगता है। इसका एक मात्र कारण था कि वे इन तमााम बातो के बारे में कुछ भी नही जानती थी। क्योकि उन्हे कभी भी स्वतन्त्रता स्वच्छ हवा में सांस ही नही लेने दिया गया था इस लिये उनकी अभिरुचि इनसब बातों में नही होती। महिलाओं को स्वतन्त्रता से इस तरीके से वंचित करना जिससे वे बालको की तरह निराअबोध और भोली बनी रहे, यह एक घृणित अपराध है, और इसका खात्मा होना चाहिये।

महिला स ाक्तिकरण की बात उठते ही यह चिन्तन आरम्भ होता है कि क्या वास्तव में महिलाये कमजोर है। जो उनके स ाक्तिकरण की आव यकता है। प्रकृति ने तो महिलाओं को की तुलना में ज्यादा प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करके सृष्टि को जन्म देने जैसा मजबूत काम सौप रखा है। परन्तु आज वै वीकरण के युग में परिस्थितियां बदल चुकी है। स्त्रियों ने अनेक मौको पर अपनी भाक्तिसम्पन्नता का एहसास कराया है। आज का समाज यह समझ चुका है कि विकास के कार्यो में स्त्री की सहभागिता के बिना वांछित लाभ प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है । सन्तान को जन्म देने व उनकापालन पोषण करने , अपने अस्तित्व की रक्षा करने जैसे कुछ कारणों ने उसे पुरुश पर निर्भर बना दिया है।

समस्या का स्वरूप : ग्रामीण महिलाओं की ग्राम स्तर पर अन्य अनेक समस्यायें है। महिलाये सामाजिक व्यवस्थाओं रीति–रिवाजों तथा अन्ध वि वासों से भी अधिक प्रभावित हो रही है । ग्रामीण समाज में पुरुष वर्चस्व की समस्या भी व्याप्त है।

अध्ययन क्षेत्र : भाोध कार्य हेतु चितरा गोकुलपुर ग्राम पंचायत का चयन किया गया है। ग्राम चितरा गोकुलपुर सीतापुर के अन्तर्गत विकासखण्ड कर्वी जनपद चित्रकूट में स्थित है। ग्राम चितरा गोकुलपुर में सामान्य जाति, पिछडी जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियां निवास करती है। इसमें

❑ एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, म0गां0चि0ग्रा0 विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) भारत
❑❑ शोध छात्रा, (पी0एच0डी0, समाजशास्त्र) म0गां0चि0ग्रा0 विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) भारत

विभिन्न आर्थिक स्तर के लोग निवास करते है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करना।
2. उन परिस्थितियों का अध्ययन करना जिसके कारण महिलायें समाज में कमजोर एवं हिंसा से पीडित है।
3. ग्रामीण महिला स ाक्तिकरण हेतु गांधी जी के विचारों के प्रति महिलाओं के दृष्टिकोण एवं रूझान प्राप्त करना।
4. गांव में स ाक्तिकरण हेतु चल रहे कार्यकमो/प्रोग्रामों की जानकारी प्राप्त करना।
5. गांधी जी के मूल्यों पर आधारित स्थाई ग्रामीण महिला स ाक्तिकरण की रणनीति तैयार करने हेतु महिलाओं के सुझाव प्राप्त करना ।

शोध प्रविधि :– भाोध कार्य हेतु ग्राम चितरा गोकुलपुर की 50 ग्रामीण महिला उत्तरदाताओं का चयन उद्दे यपूर्ण निद ान द्वारा किया गया है। जिसमें विभिन्न धर्म, जाति एवं आर्थिक , सामाजिक परिस्थितियों के महिला उत्तरदाता को चुना गया है।

तथ्यों का सारणीयन वर्गीकरण एवं विश्लेषण :–

तालिका संख्या–01
जाति के आधार पर वर्गीकरण

क्र. सं.	जाति	संख्या	प्रति ात
1	सामान्य	05	10
2	पिछडी	20	40
3	अनुसूचित	21	42
4	अनुसूचित जनजाति	04	08
	योग	50	100

विश्लेषण :–उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता अनुसूचित जाति के पाये गये। क्योकि इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति के लोगों का बाहुल्य पाया गया।

तालिका संख्या–02
शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं0	िाक्षा	संख्या	प्रति ात
1	प्राथमिक	06	12
2	माध्यमिक	16	32
3	उच्च	13	26
4	निरक्षर	15	30
	योग	50	100

विश्लेषण :– उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता माध्यमिक ि ाक्षा प्राप्त पाये गये। क्षेत्र में अन्धवि वास और गरीबी के कारण लडकीयों की भाादी जल्दी कर दी जाती है जिससे इनकी ि ाक्षा माध्यमिक तक ही पायी गयी।

तालिका संख्या–03
हिंसा एवं उत्पीडन के आधार पर वर्गीकरण

क्रम सं0	हिंसा एवं उत्पीडन	संख्या	प्रति ात
1	दहेज की मांग पूरी न होने पर	08	16
2	पुत्र रत्न न पैदा होने पर	06	12
3	परिवार में जवाब देने या विरोध करने पर	21	42
4	यौन सम्बन्धों में सामंजस्य न होने के कारण	15	30
	योग	50	100

विश्लेषण :– उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिलाओं को परिवार में जवाब देने या विरोध करने पर हिंसा या उत्पीडन का सामना करना पडता है।

तालिका संख्या–04
समाज में महिलाओं के कमजोर होने के कारणों के आधार पर वर्गीकरण

क्रम सं0	विकल्प	संख्या	प्रति ात
1	ि ाक्षा के स्तर में कमी	11	22
2	सामाजिक व्यवस्थाओं के कारण	05	10
3	पुरुश वर्चस्व की मानसिकता	165	32
4	महिलाओं की पुरुशो पर आर्थिक निर्भरता	04	08
5	अन्य	14	28
	योग	50	100

विष्लेषण :– उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिलायें पुरुष वर्चस्व की मानसिकता को समाज में स्वयं को कमजोर होने का कारण मानती है। इन महिलाओं को पारिवारिक स्तर पर इनका स्थान पुरुषो से निम्न भी पाया गया।

तालिका संख्या–05
गांधी जी के विचारो की प्रासंगिकतां के आधार पर वर्गीकरण

क्रम सं0	गांधी जी के विचार	संख्या	प्रति ात
1	महिलाओं की स्वतन्त्रता एवं समानता	19	38
2	महिलाओं की ि ाक्षा पर जोर	05	10
3	महिलाओं की भोशण से मुक्ति	04	08
4	राजनीति की मुख्य धारा में भागीदारी	02	04
5	उपर्युक्त सभी	20	40
	योग	50	100

विश्लेषण :– उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिलायें गांधी जी के महिलाओं के प्रति सभी दृष्टिकोण से सहमत पायी गयी।

तालिका संख्या–06
महिला सषक्तिकरण कार्यक्रमो के आधार पर वर्गीकरण

क्रम सं0	महिला स ाक्तिकरण कार्यक्रम	संख्या	प्रति ात
1	स्वयं सहायता समूह	10	20
2	महिला प्र िक्षण	24	48
3	लाडली लक्ष्मी योजना	02	04
4	अन्य	14	28
	योग	50	100

विश्लेषण : उपर्युक्त तालिका से स्पश्ट है कि सर्वाधिक महिलाओं का मानना है कि महिला स ाक्तिकरण हेतु महिला प्र िक्षण कार्यक्रम एक स ाक्त माध्यम है।

तालिका संख्या–07
स्थायी महिला सशक्तिकरण के आधार पर वर्गीकरण

क्रम सं0	विकल्प	संख्या	प्रति ात
1	पुरुशो की मानसिकता में बदलाव लाकर	09	18
2	महिलाओं की निर्णय में भागीदारी	11	22
3	महिलाओं में आत्मवि वास एवं क्षमताएं विकसित कर	12	24
4	महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढाकर	03	06
5	लडकियों / महिलाओं को ि क्षित कर	15	30
	योग	50	100

विश्लेषण : उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिलाओं ने महिला स ाक्तिकरण के लिये महिलाओं की ि क्षा को अनिवार्य बता रही है।उनका मानना है। ि क्षित महिला ही अपना सर्वागीण विकास कर सकती है।

निष्कर्ष :

1. सर्वाधिक 42 प्रति ात अनुसूचित जाति की महिलायें स ाक्तिकरण की अग्रसर पायी गयी।
2. 32 प्रति ात महिला उत्तरदाता माध्यमिक स्तर की ि क्षा प्राप्त पायी गयी।
3. सर्वाधिक 42 प्रति ात महिलाओं ने स्वीकार किया कि उन्हे परिवार में जवाब देने या विरोध करने पर हिंसा का सामना करना पडता है।
4. 32 प्रति ात महिलायें पुरुश वर्चस्व की मानसिकता से समाज में अपने को कमजोर मान रही हैं।
5. सर्वाधिक 48 प्रति ात महिलाओं का मानना है कि स ाक्तिकरण हेतु प्र िक्षण एक स ाक्त माध्यम है।
6. 30 प्रति ात महिलाओं का सुझाव है कि महिला स ाक्तिकरण के लिये ि क्षा की वि ोष आव यकता है।

सुझाव :

1. गांव स्तर की सभी जाति की महिलाओं को जागरूक करने की आव यकता है।
2. अ िक्षित या घरेलू महिलाओं को स्वयं के स ाक्तिकरण हेतु जागरूक करना आव यक होगा।
3. ि क्षित महिलाओं को भी स ाक्तिकरण हेतु प्र िक्षित करने की आव यकता है।
4. गांधी जी के मूल्यों के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र में वि ोष योजनाओं के संचालन की आव यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुखर्जी रवीन्द्र नाथ '' भारत में सामाजिक परिवर्तन 1996 ''
2. सक्सेना डी0एस0 व्यापारिक संगठन 1991, साहित्य भवन हॉस्पिटल रोड आगरा 282003
3. सिंह वीरेन्द्र नाथ '' ग्रामीण समाज ाास्त्र '' विवेक प्रका ान दिल्ली
4. लाल एम0ए0 ''व्याख्यान'' 1997, समाज कल्याण केन्द्रिय समाज बोर्ड
5. सिंह यू0बी0 'योजना' फरवरी मार्च 1997, प्रका ान विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय पटियाला हाउस नई दिल्ली
6. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका 2011

*****